19/1/1965, मंगलवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– ये वक्त जा रहा है.....

बाकी बहुत थोड़ा समय रहा है। बहुत गई, थोड़ी रही, अब थोड़े की भी थोड़ी रही है। अब किसके लिए तुम इस पुरानी दुनिया में बैठे हो? किसके लिए तुम इस दुःख रूपी दुनिया में (बैठे हो)? यहाँ तो दुःख ही दुःख है। सुख का तो कोई नाम–निशान नहीं है। सुख तो है ही सुखधाम में; क्योंकि सतयुग को सुखधाम कहते हैं और कलहयुग को दुःखधाम कहते हैं। तो बाप कहते हैं जबकि आया हूँ तेरे लिए, सुखधाम ले चलने के लिए, तो फिर यहाँ क्यों रुक पड़े हो? क्यों दुःखधाम से तुम्हारी दिल लग गई है? वा दुःखधाम में इन सब भांतियों से वा तुम्हारे इस शरीर से क्यों दिल लग गई है? तुम्हारी दिल सुखधाम से क्यों नहीं लगती है? इस गीत के अर्थ को तो बच्चे ही समझ सकते हैं ; क्योंकि बाप तो आए हैं सुख में ले चलने के लिए। यह तो है ही, जैसे सन्यासी कहते हैं कि यहाँ तो कागविष्ठा समान सुख है; इसलिए ये कागविष्ठा समान सुख में न रहें, उनसे सन्यास करते हैं। तो बाप भी ऐसे ही कहते हैं कि अभी सुखधाम का साक्षात्कार तो बच्चों को हुआ ही है। यह पढ़ाई है ही सुखधाम के लिए, कोई दुःखधाम के लिए नहीं है। सुखधाम ले चलने के लिए (है)। अभी क्यों ठहरे हो? पढ़ाई में कोई तकलीफ तो नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं बाप को याद करो। उस योग से तुम सदैव हेल्दी रहेंगे यानी निरोगी रहेंगे। तुम्हारी काया कल्पवृक्ष समान बड़ी रहेगी; क्योंकि यह जो मनुष्य सृष्टि का झाड़ है उसकी तो आयु बड़ी है ना। इस झाड़ की आयु 5000 वर्ष है। इतनी आयु कोई झाड़ की नहीं होती है। यह मनुष्य सृष्टि के झाड़ की आयु इतनी है। उसमें आधाकल्प है दुःख, आधाकल्प है सुख। अब आधाकल्प तो तुमने दुःख देखा। अभी बाप (कहते) हैं चलो सुखधाम। क्या यहाँ दुःखधाम में मज़ा आता है? इस विषय वैतरणी नदी में गोता खाने में तुमको मज़ा आता है? एक/दो को ज़हर पिला करके आदि,मध्य,अंत दुःखी करना तुमको अच्छा लगता है? श्रीमत कहती है कि अब इस विख की लेन–देन को छोड़ो और इस ज्ञान अमृत (को पीओ); क्योंकि यह ज्ञान है। योग और ज्ञान। ज्ञान जितना लेंगे, अविनाशी ज्ञान रत्न जितना धारण करेंगे उतना बहुत साहूकार बनेंगे। जितना याद में रहेंगे इतना बहुत निरोगी रहेंगे; क्योंकि बाप ने समझाया है कि यह हॉस्पिटल भी है तो यूनिवर्सिटी भी है। सो भी किसकी हॉस्पिटल? कौन स्थापन करते हैं? परलौकिक परमपिता परमात्मा आ करके ये हास्पिटल (बनाते हैं)। इसको रूहानी हॉस्पिटल कहा जाता है। हॉस्पिटलें तो बहुत होती हैं ना। कभी भी कोई हॉस्पिटल और यूनिवर्सिटी इकट्ठी नहीं होती है। तो यह वण्डरफुल है ना! यह हॉस्पिटल और यूनिवर्सिटी इकट्ठी (है)। इनसे हेल्थ भी मिलती है तो वेल्थ भी मिलती है। फिर क्यों नहीं तुम इस खज़ाने को लेने के लिए खड़े हो जाते हो? क्यों(कि) आजकल–2 करते, समय बीत करके अचानक विनाश आ ही जाएगा। इसलिए श्रीमत (पर चलो)। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाप मत देते हैं। औरों को भी मत दो (कि) भई, अभी तुम हॉस्पिटलें क्यों खोलते हो? गवर्मेंट को भी मत दो कि इस समय में बाप आ करके हॉस्पिटल और यूनिवर्सिटी इकट्ठी खोलते हैं, जिससे हेल्थ और वेल्थ मिलती है। फिर ऐसी हॉस्पिटलें क्यों नहीं खुलवाती हो? पीछे हॉस्पिटल, यूनिवर्सिटी या कॉलेज मनुष्य भी खोलते हैं। साहूकार लोग और गवर्मेन्ट भी खोलती है, दोनों खोलते हैं। तुमको समझाया गया है कि दोनों को कहो, मनुष्यों को भी कहो, जो हॉस्पिटल खोलते हैं, उनको बोलो– वाह ! इस हॉस्पिटल से क्या होगा! ये हॉस्पिटलों में तो मरीज़ आते ही रहते हैं। इनका कोई अंत नहीं है। यह तो आधाकल्प से बीमारों की हॉस्पिटलें और ये कॉलेजें होती आई हैं। वो हैं सब जिस्मानी और यह है रूहानी। तो किसको पकड़ना चाहिए? जो एजूकेशन मिनिस्टर हैं उनको पकड़ना चाहिए। फिर जो हेल्थ के ऊपर है, एक मेम है, माई है, उनको पकड़ना चाहिए। क्या करते हो? अभी तो बाप ने आ करके कम्बाइण्ड यूनिवर्सिटी और हॉस्पिटल दोनों खोली है और वो राय देते हैं कि ऐसे खोलो। (यह) तो हमेशा के लिए (है)। ये तो जन्म–जन्मांतर के लिए

भोगते रहते हैं, हॉस्पिटलों में ढेर पड़े ही रहते हैं। जब से यह माया (ने) प्रवेश किया है और मनुष्य रोगी बने हैं (तब से) हॉस्पिटलें चली ही आती हैं। फिर आजकल यूरोपियन दवाइयाँ हैं, आगे वैद्यों की देशी दवाई थी। अभी एलोपैथिक,हौम्योपैथिक फलानी दवाई हो गई है। यह तो है सबसे अच्छी रूहानी दवाई और यह कौन देते हैं? अविनाशी सर्जन। देखो, बाप को अविनाशी सर्जन भी कहते हैं। तो गाया भी जाता है ज्ञान इंजेक्शन। ज्ञान इंजेक्शन कहाँ से मिलता है? रूहानी बाप से। रूहानी बाप किसको इंजेक्शन लगाते हैं? आत्माओं को इंजेक्शन लगाते हैं। आत्मा को इंजेक्शन लगाने वाला इस दुनिया भर में और कोई हो ही नहीं सकता है– न साधु, न संत, न महात्मा; क्योंकि वो तो कहते ही हैं कि आत्मा निर्लेप है, तो फिर उनको क्या मालूम कि आत्मा के लिए (कोई इंजेक्शन भी होता है।) बीमारी ही नहीं है तो पीछे उनको इंजेक्शन कहाँ से लगाएँगे! तो बाप आ करके बच्चों को समझाते हैं कि बच्चे, यह राय दो, जो–2 भी कोई धर्मशाला खोलने वाला हो या कोई हॉस्पिटल खोलने वाला हो या कोई कॉलेज खोलने वाला हो तो उनको समझाओ। ऐसे बहुत हैं सब प्रकार के सिंधी,गुजराती,मुसलमान। ये सब बहुत हॉस्पिटल और कॉलेज खोलते हैं; क्योंकि गवर्मेन्ट के पास तो पैसे हैं नहीं और वो तो लाखों रुपया खा जाती है।.....यह देखो, तीन पैर जमीन की एक टुकड़ी, बस उसमें खोल सकती हो। कोई भी आवे उनको यह बताना चाहिए– अरे, बाप को याद करो तो सदैव हेल्दी रहेंगे और यह जो सृष्टि का चक्र है सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलहयुग इसका चक्कर उनको समझाओ तो चक्रवर्ती राजा बन जाएँगे। अरे, यह तो एक छोटी–सी तीन पैर पृथ्वी का उसमें तुम हॉस्पिटल खोल सकती हो, यूनिवर्सिटी खोल सकती हो। देखो, ये बातें तुम समझती तो हो।.....जो थोड़े भी धनवान हैं या गरीब हैं, कोई भी खोल सकते हैं। धनवान बड़ी खोलेंगे और गरीब छोटी खोलेंगे और ऐसे कायदा भी है। गवर्मेन्ट बड़ी–2 खोलती है और मनुष्य छोटी–2 अस्पतालें खोलते हैं। कितनी अस्पतालें हैं! स्कूल भी ऐसे ही है। गवर्मेन्ट बड़ी–2 कॉलेज, यूनिवर्सिटी खोलती है और फिर जो दूसरे हैं वो स्कूल खोलकर बैठ जाते हैं। अरे, आजकल तो टेन्ट्स में भी स्कूल बनाकर बैठते हैं। पैसे नहीं हैं गवर्मेन्ट के पास तो टेन्ट्स लगाए भी पढ़ाई कराते हैं और शिफ्ट्स भी रखी है– फलाना 8 बजे से 10 बजे , फिर फलाना स्कूल 10 से 12 बजे , 4 बजे से 6 बजे ; क्योंकि जगह है नहीं, कुछ भी पैसे है नहीं। इसमें कोई प्रकार का खर्चा वगैरह कुछ है नहीं। खास कोई बनानी है नहीं। कोई भी जगह मिले वहाँ बैठ करके.....। कोई औजार वगैरह या दवाइयाँ कुछ भी दरकार नहीं है। बड़ी सिम्पल (है) एकदम। जो करेगा सो पाएगा। अभी बहुत ही बच्चियाँ हैं, वो भी खोलती हैं, तो बच्चे भी खोलते हैं।..... बाप तो कहते हैं तुम ही खोलो, तुम ही सम्भालो। हमको तो इससे कोई भी कनेक्शन नहीं है। जो करेगा सो पाएगा, बहुतों का कल्याण करेगा। है तो कितना सहज। अब कौन कहते हैं? बेहद का बाप बैठ करके समझाते हैं। बाप बैठ करके मत देते हैं। किसलिए? श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बने। तो देखो, सुनते बहुत हैं और करते कुछ भी नहीं हैं; क्योंकि तकदीर में नहीं है। वो हेल्थ एण्ड वेल्थ यानी निरोगी काया और धनवान बिल्कुल कुबेर (जैसे), तुम बाबा से हीरे–जवाहरों के महल लो। देखो, बाबा कितना देने आया है! वैकुण्ठ की बादशाही, हीरे–जवाहरातों के महल मिलेंगे। यह जानते हैं कि बरोबर भारत ऐसा था। देखो, था ना, श्री लक्ष्मी–नारायण का राज्य था। कब था? सतयुग में था। तो ज़रूर उनको यह वर्सा बाप ने दिया होगा। अब तो सतयुग नहीं है ना। न सतयुग है, न देवताओं का वो वर्सा है। अभी तो कलहयुग है, दुःख ही दुःख है। तो बाप बोलते हैं कि अच्छा, फिर कलहयुग से सतयुग तो होना है ना। सो भी तो मुझे आ करके फिर सतयुग की स्थापना करनी पड़ेगी ना। मनुष्य तो उद्घाटन करते हैं, ब्रिज का, फलाने महल का....। तो देखो, बाप कहते हैं मैं स्वर्ग का उद्घाटन करता हूँ। चलो भई, अभी स्वर्ग (में) रहने के लायक बनो। मेरी मत पर, श्रीमत पर लायक बनो। तो कल्प–2 तुम लायक बनते हो, ऐसे नहीं

कि कोई नई बात है। नहीं, कल्प–2 पार कराता हूँ। अभी भी देखो कराता हूँ। देखा जाता है गाँवड़े में गरीब बिचारे बहुत ही...लेते हैं; क्योंकि खर्चा तो कुछ है नहीं। वहाँ तो आजकल कुछ खर्चा है। गरीब बहुत लेते हैं। सो बाप भी कहते हैं मैं गरीब निवाज़ भी हूँ। साहूकारों के पास तो पैसे हैं; इसलिए वो जैसे स्वर्ग में हैं। बाकी गरीब हैं। भारत भी गरीब है। तो भारत में फिर जो गरीब हैं, उनको ही उठाते हैं। साहूकार तो देखो कुम्भकरण की नींद में सोए पड़े हैं। ऐसे कहते हैं ना, अज्ञान अंधेरे में सोए पड़े हैं। तो अज्ञान बरोबर कितना! ज्ञान–अज्ञान में कितना फर्क रहता है। आगे कुछ भी नहीं जानते थे। एकदम ब्लाइण्ड थे। अभी देखो, बाप ने ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है तो कितनी सूझ पड़ी है– सारी दुनिया का चक्कर कैसे फिरता है, हम कहाँ से आते हैं, बाप के पास रहते हैं, बाबा स्थापना कैसे करते हैं, पतित दुनिया को पावन कैसे बनाते हैं वा ऐसे कहें कि नई दुनिया, नई राजधानी स्थापन (कैसे करते हैं और) पुरानी का कैसे विनाश करा देते हैं। तुमको सब नॉलेज बुद्धि में आ (गई है)। और सभी घोर अंधियारे में हैं, नो नॉलेज। हैं मनुष्य, हैं एक्टर्स; परन्तु इस ड्रामा के आदि,मध्य,अंत का कुछ भी पता नहीं है। मुख्य कौन–2 हैं, कुछ भी पता नहीं है। यहाँ बाहर वाले आ करके एक/दो बड़े–2 आदमियों की समाधियों और कब्रों के ऊपर फूल चढ़ाते रहते हैं और जो पतित–पावन है उनको तो कोई पूछते भी नहीं हैं, नाम भी किसको याद नहीं है। उनके (लिए) तो बता दिया है कि शिव परमपिता परमात्मा वो तो ठिक्कर में है, भित्तर में है, कुत्ते में है, बिल्ले में है। वो तो गालियाँ देते रहते हैं, ग्लानि (करते रहते हैं)। गालियाँ को ग्लानि (अथवा) डिफेम कहा जाता है। डिफेमेशन केस भी चलता है। तो देखो, ये जो भी साधु,संत,महात्माएँ हैं, (इन्होंने) डिफेम किया है। इनके ऊपर धर्मराज का केस चलेगा। डण्डा खा करके, किसाब–किताब चुक्तू कर फिर वापस जाएँगे; क्योंकि यह तो है ही कयामत का समय। बाप आ करके बच्चों को बताते हैं कि यह कयामत का समय है। सब हिसाब–किताब चुक्तू करके, सज़ाएँ खा करके, आग में जल–मर करके फिर सभी को वापस ले जाऊँगा। ऐसे कहते हैं ना! सबको वापस साथ में ले जाऊँगा। पण्डा बन करके आया हूँ। तुम पाण्डव सेना हो ना यानी तुम रूहानी पण्डे (हो)। तो बताते हैं वो जिस्मानी पण्डे ब्राह्मण, ये रूहानी पण्डे ब्राह्मण। वो पण्डे तो जन्म–जन्मांतर से जिस्मानी तीर्थ (यात्राएँ कराते आए हैं)। यह एक ही तीर्थ (है), इसको रूहानी तीर्थ कहा जाता है। सो भी कैसे? घर बैठे। कोई चलना–करना नहीं होता है, धक्का–थाबा नहीं खाना होता है। बोलते हैं बस, जितना हो सके इतना याद करते रहो। वो दिन में पैदल जास्ती करते हैं। यह बाप कहते हैं रात में याद करो। रात में दौड़ी करो। रूहानी बुद्धि का योग रात में जास्ती करो यानी यह ट्रेवल रात को करो। हे नींद के जीतने वाले! रात को मुझे याद करो। तो मेरे को याद करते जैसे कि तुम मेरे पास नज़दीक आ रहे हो। देखो, कैसे यह है रूहानी यात्रा और वो है जिस्मानी यात्रा। वो भी ब्राह्मण, ये भी ब्राह्मण। ये हैं ब्रह्मामुखवंशावली ब्राह्मण और वो हैं कुखवंशावली ब्राह्मण। देखो, सब फर्क कितना अच्छी तरह से बताते हैं। भई, अभी ब्राह्मण हो, अभी रूहानी यात्रा में तत्पर हो और फिर पवित्र भी बनो। वो तो अपवित्र हैं। वो तो खुद ही अपवित्र हैं और तुमको तो पवित्र रहना है; क्योंकि इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में ये पवित्र ही रहते हैं। वो ब्राह्मण तो कोई पवित्र होते नहीं हैं। भले मंदिर में श्री लक्ष्मी–नारायण की पूजा के ऊपर बैठे हुए हैं, तो भी ब्राह्मण नाम है ना, तो वो उनको स्नान–पानी करा सकते हैं। हैं पतित ; (लेकिन) नाम है ब्राह्मण और बाकी जो मंदिर में दर्शन करने वाले जाते हैं, वो ब्राह्मण नहीं हैं। बाकी पतित जैसे वो ब्राह्मण हैं, वैसे वो हैं। सिर्फ नाम है ब्राह्मण तो देखो उनको पूजते हैं और.....जो दूसरे पतित हैं उनको हाथ नहीं लगाने देते हैं। तो देखो, ब्राह्मणों का कोई मान तो था ना। यह तो मनुष्य समझते नहीं हैं कि दूसरे को क्यों नहीं श्री लक्ष्मी–नारायण को हाथ लगाने देते। तो वो कहते हैं– ये गृहस्थी हैं, विकारी हैं और ये देवी–देवताएँ तो निर्विकारी हैं। उनको ये विकारी कैसे हाथ लगाएँगे? पर जब ब्राह्मण लगाते हैं तो वो भी तो विकारी हैं। वो कोई ब्रह्मचारी थोड़े ही हैं। अरे, कोई–2 ब्रह्मचारी होंगे, नहीं तो बहुत ही विकारी बैठे हैं। घर–बार वाले सभी

उनकी पूजा करते हैं। है सभी अंधश्रद्धा। अंधेरी नगरी, चौपट राजा। किसको कोई(कुछ) पता ही नहीं है। बाप आ करके अच्छी तरह से समझाते हैं। तो ब्राह्मण का नाम कितना बड़ा है। ब्राह्मणी या ब्राह्मण वो, जो अपने 21 कुल का उद्धार करे। अगर कहेंगे कन्या, तो ज़रूर कन्या करती होगी। तो ज़रूर उनके माँ–बाप तो होंगे ना। तो देखो, कन्याओं के माँ–बाप ये बैठे हैं। वो ही तो उनको सिखलाते हैं कि 21 पीढ़ी तुम स्वर्ग के मालिक कैसे बन सकते हो। तो बाप बैठ करके बार–2 समझाते हैं। है तो गुप्त वेश में। अब यह तो बच्चे समझते हैं कि शिवबाबा बैठ करके ब्रह्मा द्वारा ये सभी राज़ हमको समझाते हैं। अगर वो कहें कि यह ब्रह्मा तो दादा था, फलाना था। तो (बाबा) बोलते हैं, वो तो धंधा करता था, वो कोई ज्ञान (थोड़े ही) देता था किसको। अभी आ करके उसने इसमें प्रवेश किया है। बहुत जन्म के अंत के जन्म के भी अंत में इनमें प्रवेश किया है, ज्ञान सुनाते रहते हैं। तो यह है रथ, शिवबाबा हुआ रथी, इस रथ में बैठने वाला। तो ज़रूर इसमें निराकार ही बैठेंगे ना। तो देखो, इन द्वारा बैठ करके बच्चों को समझाते हैं कि बच्चे, यह भी हमारा रथ बहुत जन्म के अंत के जन्म का भी पतित (है)। तो पहले ज़रूर इनको ही तो पावन बनाना पड़े ना। तो देखो, सबसे पहले–2 यह पावन बन जाते हैं; क्योंकि बिल्कुल नज़दीक में हैं। यह तो ऐसे नहीं कहते हैं कि मैं कोई भगवान हूँ या फलाना हूँ। खुद कहते हैं बहुत जन्म के अंत के जन्म का भी मेरा अंत है और वो भी वानप्रस्थ अवस्था में। वो विकारी भी बन चुके हैं, पतित हैं। ऐसे नहीं कहते हैं कि हम कोई बाल ब्रह्मचारी हैं। फिर बाप ने आ करके इसमें प्रवेश किया है और हम थोड़े ही कुछ जानते थे। बाप कहते हैं तुम अपने जन्मों को थोड़े ही जानते थे। अब हम तुमको बैठ करके सब राज़ बताता हूँ कि यह जो है, जिसमें प्रवेश करता हूँ, यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं, वैसे तुम भी अपने जन्मों को नहीं जानते थे। तो सन्मुख कितना सीधा बैठ करके समझाते हैं। अभी यह भी बुद्धि में आता है बरोबर परमपिता परमात्मा पतित–पावन। पतित–पावन माना गुरू हो गया; क्योंकि वापस ले जाएगा। पण्डा गुरू हो ही गया। तो बाप भी है, तो टीचर भी है। देखो, ये सारे ड्रामा के आदि,मध्य,अंत का राज़ समझाते हैं। अब तुम बच्चे समझते हो कि यह बाबा भी है, हमारा शिक्षक भी है, हमारा पण्डा सद्गुरू भी है, हमको साथ में ले जाएँगे। तो ऐसे बाप की, टीचर की और गुरू की राय लेने से फिर हम तो अपना ऊँचे ते ऊँचा पद पाएँगे। अभी कितना सन्मुख बैठ करके समझाते हैं। अब कोई तो धारण करते हैं और श्रीमत पर चलते हैं। कोई न चलने से, बाप का बच्चा न बनने से या उनकी मत पर न चलने से इतना ऊँच मर्तबा कैसे पाएँगे! ये बेहद के बाप का मुक्ति–जीवनमुक्ति (का वर्सा है)। पहले जाएँगे मुक्तिधाम में, फिर जीवनमुक्ति में। बाप भी कहते हैं ना– बच्चे, अपने शांतिधाम को याद करो, सुखधाम को याद करो, देह सहित यह दुःखधाम को भूलते जाओ ; क्योंकि अपने को नंगा समझो और कहो कि अभी ये देह से हमने बहुत ही 84 (जन्म) का नाटक का पार्ट बजाया। अभी वापस जाता हूँ। बाबा लेने आया हुआ है। सबको वापस जाना है। ऐसे नहीं कि एक(अकेले) जाता हूँ। नहीं, सबको वापस जाना है; क्योंकि सब(को) फिर से अपना–2 पार्ट रिपीट करना है। हर एक की आत्मा में पार्ट भरा हुआ है और अविनाशी पार्ट (है)। कभी बंद होने वाला नहीं है। यह जो दुनिया है, प्रलय तो कभी होती नहीं है ना।.....बस शांतिधाम,सुखधाम,दुःखधाम। फिर जाएँगे शांतिधाम,मुक्तिधाम,जीवनमुक्तिधाम,जीवनबंधधाम में। जीवनबंधधाम तो नहीं कहेंगे ना; परन्तु रहने के स्थान को धाम कहा जाता है। सिर्फ यही चक्कर अच्छी तरह से फिराते रहें, बाप की याद में रहते रहें और पवित्र रहें तो एकदम बेड़ा पार (है)। हॉस्पिटल में क्या है?...संजीवनी बूटी मिलती है, जीयदान मिलता है। काल के ऊपर भी विजय पहनते हो। वहाँ अकाले मृत्यु आती नहीं है। जब बुड्ढे होते हो (तो) जैसे सर्प बुड्ढा होता है, अपनी खल बदलता रहता है, वैसे तुम बुड्ढा होंगे, ये खल छोड़ करके नई खल आपे (ही) ले लेंगे। कोई तकलीफ नहीं, न रोना, न पीटना, कुछ भी नहीं। तो अभी इस अवस्था में, ऐसी अवस्था यहाँ बनानी है। अभी तो हम ये पुराने शरीर को छोड़ देने के हैं। हम तो वापस अपने स्वीट होम जाएँगे। फिर आना है स्वीट राजधानी में। वहाँ

काल हमको खा ही नहीं सकता है। हम जब बुड्ढे होंगे तब साक्षात्कार होगा, हम आपे ही बोलेंगे कि ये शरीर को छोड़ो। देखो, सर्प के खल का भी ये दृष्टान्त देते हैं ना। तो सन्यासी नहीं दे सकते हैं। यह तो स्वर्ग में एक खल छोड़कर फिर नई लेनी होती है। यह तो गृहस्थियों के लिए, प्रवृत्तिमार्ग वालों के लिए दृष्टान्त है। सन्यासियों के लिए यह दृष्टान्त ही नहीं है; परन्तु उन्होंने यह भ्रमरी वगैरह का जो दृष्टांत है जैसे ये सभी कॉपी की है वा वो कॉपी करते हैं कि हम सेकेण्ड में जीवनमुक्ति दे सकते हैं। जीवनमुक्ति में तो मेल भी चाहिए, फिमेल भी चाहिए। जीवनमुक्ति का अर्थ है। जीवनबंध में मेल और फिमेल हैं तो जीवनमुक्ति में मेल–फिमेल चाहिए। ये निवृत्तिमार्ग वाले तो सिर्फ मेल (हैं), ये कैसे किसको जीवनमुक्ति दे सकते हैं? तो देखो, यहाँ ठगी है ना। इसको ही कहा जाता है ये सब भ्रष्टाचारी हैं। ठगी बहुत करते हैं, करप्शन। पीछे देखो, अभी लौट करके पैसा मिला है तो ये मण्डलेश्वर श्री–श्री आ करके बड़े–2 मकान (और) फ्लैट्स बना रहे हैं। तो अभी ठगी है ना। अभी यह है ड्रामा। बाप बैठ करके समझाते हैं अभी ये सभी ख़तम होने का है; इसलिए चलो अपने बाप के पास, बाबा को याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश होगा, नहीं तो बहुत सज़ा खाएँगे और पद भी भ्रष्ट होगा ; इसलिए निरंतर मुझे याद करने की कोशिश करो। अंत मते मुझे याद करो, ऐसे न हो कि बाल–बच्चा वगैरह कोई याद आ जाएगा, फिर पुनर्जन्म लेना पड़ेगा, उसी समय में सज़ाएँ खाएँगे। जैसे बाबा ने समझाया काशी कलवट बनारस में खाते हैं ना तो उसी समय में बहुत जन्मों की सज़ा भोगते–3 तब वो बिचारे सज़ाओं से मुक्त हो, फिर नए से शुरू हो जाती है; क्योंकि वापस तो जाते ही नहीं हैं। तो बाप बैठकर सब बातें कितना अच्छी तरह से समझाते हैं। किसको भी कह सकते हो ना अरे भई देखो, हेल्थ एण्ड वेल्थ! योग से हेल्थ और थोड़ी–सी नॉलेज से वेल्थ, जब एक सेकेण्ड में ऐसी सहज मिल सकती है, इसको फिर जीवनमुक्ति कहा जाता है। जीवनमुक्ति कहा ही जाता है स्वर्ग को, तो फिर इतना सब पैसा बरबाद करने, कॉलेजें खोलने....की दरकार ही क्या है? तो क्यों ना हेल्थ मिनिस्टर और एजुकेशन मिनिस्टर को पकड़ें या जो भी पैसे वाले लोग हैं उनको बोलो कि बाप नहीं चाहते हैं... तुम्हीं अस्पताल खोलो, तुम्हीं को फायदा रहेगा। तुम्हीं अस्पताल खोलो, जो करेगा सो पाएगा। तुम्हीं कहाँ न कहाँ छोटी–सी अस्पताल खोल दो तो बहुतों का कल्याण हो जाएगा। तो ज़रूर गरीब, गरीब अनुसार खोलेंगे। गरीबों के पास अक्सर गरीब ही जाएँगे। साहूकार खोलेंगे तो उनके पास कोई साहूकार जाएँगे। तो साहूकार अपने साहूकारों का उद्धार करें, गरीब अपने (गरीबों का) उद्धार करें। अगर साहूकार न करेंगे तो फिर गरीब...ले जाते हैं। बाप भी कहते हैं कि गरीब ही मेरे से आ करके लेते हैं। साहूकार तो अपने....। कोई स्वर्ग है उनके लिए? बड़े–2 लखपति, करोड़पति (हैं)। अरे, जिनसे ये खेल–पाल कराते हैं उन एक्टर्स भी छोड़ते नहीं हैं। उनसे पैसा पकड़ लेते हैं। गाया भी जाता है ना– किनकी दबी रहेगी धूल में, किनकी राजा खाय, किनकी चोर हड़ी वजन, किनकी साड़े बाय। जैसे हम भक्तिमार्ग में खर्च करते हैं, यह विनाश से पहले क्यों नहीं करते हो? सो भी बाबा मत देते हैं कि विनाश के पहले कुछ कर लो, तो वहाँ कुछ पद मिल जाएगा। मरना तो है ही, सब छोड़ना तो है ही; क्योंकि यह ड्रामा का अंत है। तो बाप सन्मुख बैठ करके बच्चों को कितना अच्छी तरह से समझाते हैं ; क्योंकि यहाँ तो अभी ठण्डी है, कोई आ नहीं सकते हैं। फिर बाबा–मम्मा बाहर में जाते तो हैं ना। देखो, चक्कर लगाने कहाँ–2 जाते हैं। तो ये नदियाँ चक्कर लगाती रहती हैं और बाकी जो बड़ी नदी है ब्रह्मपुत्री और सागर, ये तो इकट्ठे ही रहेंगे। बाबा ने बताया है ना कि सागर का कलकत्ते में मेला लगता है। ब्रह्मपुत्री तो यह ठहरी, मम्मा तो सरस्वती है और बच्चियाँ (में) तो कोई का ज्ञान गंगा नाम है, जमुना है, फलाना बहुत ही नाम है। तो ज्ञान गंगाएँ हैं ना। वो तो पानी की नदी है, उनमें कोई मनुष्य कैसे पतित से पावन बनेंगे ? वो तो स्नान करते आते हैं। देखो, अभी भी कुम्भ के मेले में मेला–मलाखड़ा लगता है। बाबा ने कितना समझाया कि यह कोई मेला थोड़े ही है। यह तो है आत्मा–परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया। यह मेला (है)। अभी देखो,

तुम्हारा मेला किसके साथ है? आत्माओं–जीवात्माओं का परमात्मा के साथ। परमात्मा अभी जीव में पधारा हुआ है। जीव का या इस शरीर का लोन लिया है। नहीं तो भला लोन लेने बगैर कैसे पढ़ाएगा ! उनको अपना शरीर तो है नहीं। देखो, यहाँ भी कहते हैं– शिवभगवानुवाच। शिव तो उनका नाम ही है। इसमें भी आए तो भी शिव (नाम ही है)। उनका नाम तो नहीं बदल सकता है ना। कृष्ण तो मनुष्य था ना। यह तो भगवान (है)। भगवान तो एक ही होता है और निराकार होता है। उनको ही कहा जाता है ज्ञान सागर। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को ज्ञान सागर नहीं कहा जाता है। ये तो पीछे ब्रह्मा को आ करके ज्ञान देते हैं। कैसे देवे? वो तो निराकार है ना! देखो, प्रवेश कर करके ज्ञान देते हैं। बाबा को देते हैं, मम्मा को देते हैं। मम्मा को भी अंग्रजी में कहा जाता है गॉडेज़ ऑफ नॉलेज। तो ज़रूर मम्मा को (यानी) सरस्वती को कहेंगे तो ब्रह्मा को भी तो नॉलेज होगी ना; क्योंकि ब्रह्मा की बेटी है ना। ब्रह्मा को नॉलेज फिर कौन देते हैं? ज्ञान का सागर। कितना सहज समझाते हैं। बरोबर अब तो जैसे बाप है गॉड ऑफ नॉलेज या गॉडेज़ ऑफ नॉलेज तो (फिर) चिल्ड्रेन भी हैं। ऐसे कहेंगे गॉडेज़ ऑफ नॉलेज, गॉड ऑफ नॉलेज तो बच्चे भी हैं; क्योंकि तुम भी सरस्वती हो, ब्रह्मा के बच्चे हो। हाँ, पुरुषार्थ अनुसार तुम्हारी नॉलेज नं०वार है। जो अच्छी तरह से नॉलेज धारण करेंगे और श्रीमत पर चलेंगे, पवित्र रहेंगे (तो ऊँच पद पाएँगे)। पवित्रता के ऊपर सारा मदार है ; इसलिए कहा है ना कि अबलाओं के ऊपर अत्याचार होते हैं। किनका? कंस,जरासिंधी, असुरों का, दुःशासन का। द्रोपदी पुकारती है ना दुःशासन (नगन करते हैं)। तो सभी दुःशासन हैं, सभी द्रौपदियाँ हैं। कोई एक थोड़े ही है, सब जो भी हैं। प्रवृत्तिमार्ग में...वो पुकारती हैं। अभी देखो, सच–2 पुकारती रहती हैं कि बाबा, यह दुःशासन हमको नगन करते हैं और अगर नहीं होती हूँ तो मारते हैं। अभी हमारी रक्षा करो। भई, रक्षा तो करेंगे, वो तो रक्षा हुई है ज़रूर। तुमने सहन किया है, तो सहन तो करना पड़ेगा ना। सहन करते–2 आखरीन में तुम भविष्य में हमेशा के लिए नगन होने से छूट जाएँगी। अत्याचार तो सहन करना पड़ेगा। बच्चियाँ लिखती हैं– बाबा, हमको इन अत्याचारों से कब छुड़ाएँगे? अरे भई, आगे भी छुड़ाया था। ड्रामा अनुसार तुम्हारे ऊपर अत्याचार थे, सबके ऊपर भी, बहुतों के ऊपर ; इसलिए तो उनको कहा जाता है जरासिंधी,शिशुपाल,कंस। सबका टाइटल अलग है।.....उन साधुओं का भी मुझे उद्धार करना है। साधु जिनका नाम है। तो अभी गीता बैठकर पढ़ेंगे। वो अक्षर जो ''साधुओं का उद्धार करते हैं'' वो अक्षर कहेंगे ही नहीं, बताएँगे ही नहीं, उसका अर्थ ही नहीं करेंगे। अभी ऐसे–2 चालाक हो गए हैं ना ; क्योंकि ये भी तो एडल्टरेशन और रिश्वतखोर सब बन गए हैं ना। सारी दुनिया ही ऐसी है तो फिर सारी दुनिया को ही खलास करना होता है। जिनको वर्सा लेना होगा वो आ करके बाप को ''बाबा–मम्मा–3'' बाबा–मम्मा जैसा फॉलो करते–2 वर्सा ले लेंगे। कोई बड़ी बात तो है नहीं। है तो बहुत ही सहज। बस वो गरीबों के लिए सहज है। हाँ, गरीब घर में होती तो बड़ा अच्छा होता। अब साहूकारों के घरों से तो एकदम निकलने भी नहीं देते हैं। बहुत कहती हैं कि कन्या होती तो बहुत अच्छा। कन्याओं को बंधन तो नहीं है ना। माताओं को बंधन है, सीढ़ी उतरनी पड़ती है। हम सीढ़ी चढ़ती तो नहीं हैं ना; क्योंकि सीढ़ी उतरने वाले वो भूलें तो बड़ा मुश्किल। तो बाप बैठकर समझाते हैं कि सिर्फ वाचा तो नहीं करनी है, वर्सा लेना है (तो) ले लो। मौत तो ऐसे भी बैठे–2 आ जाती है। देखो, कितने एक्सीडेंट्स होते हैं! आज तूफान लगा तो साली रेल समुद्र में जाकर पड़ी, आज बस गिरी, आज यह फलाना एक्सीडेंट हुआ, आज अर्थक्वेक हुई। मरने में अभी देरी थोड़े ही है। अभी तो ये आफतें नज़दीक होती जाती हैं, रिहर्सल्स होती जाती हैं। फाइनल हो जावे इससे पहले अपना वर्सा बाप से ले लो, नहीं तो फिर ज़ार–2 रोएँगे, कल्प–कल्पांतर ऊँचा वर्सा नहीं पा सकेंगे। इसलिए है बहुत सहज, बाप को याद करो। अभी 84 का पार्ट पूरा होता है। अभी हम वापस जाते हैं, फिर आ करके स्वर्ग में अपनी बादशाही करेंगे।...और तो कुछ जास्ती कहते ही नहीं हैं। वो भी नहीं करते हैं, इसमें मोह, उसमें मोह, उसमें मोह। बाबा कहते हैं– नहीं, यह देह सहित इन सबसे (मोह

नष्ट करके) अपने को आत्मा निश्चय करके मुझे याद करो, परमात्मा को याद करो। अपने को आत्मा निश्चय करके मुझे याद करो और यही ख्याल करो कि हमारा 84 का जन्म पूरा हुआ, हम जाते हैं; क्योंकि बच्चों से ही बात करते हैं, जिनका 84 जन्म पूरा (हुआ)। दूसरे कोई से तो बात करते ही नहीं हैं। बच्चों को ही बोलते हैं कि 84 पूरा हुआ, अभी चलो वापस। तुमको स्वर्ग में चलना है (या) नहीं चलना है या अभी यहीं नर्क में गोता खाना अच्छा लगता है? देखो, पूछते हैं। कौन पूछते हैं? बड़ा बाप पूछते हैं। अच्छा, बच्चों को इशारा दिया। यह नॉलेज है इशारे की। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति, तो इशारा हुआ ना। इशारे के बदली में देखो, बच्चों को डिटेल में कितना ज्ञान दिया हुआ है। रोज़ नई–2 बातें समझाते रहते हैं। अभी बोलते हैं जहाँ भी रहो, बोलो– देखो, तुम क्या करो कि एक अस्पताल कम यूनिवर्सिटी (खोलो)। होता ही नहीं है। बाप खोलते हैं। देखो, बात सुनो, बाप कहते हैं कि योग से एवर हेल्थी बनेंगे, तुम्हारे विकर्म सब भस्म हो जाएँगे। यह तो भगवानुवाच है, खाली कृष्ण का नाम दे दिया है। है भगवानुवाच, मनुष्य का नाम दे दिया है। वो कहते हैं ना मेरी याद में रहने से, इस रूहानी यात्रा में रहने से तुम्हारे विकर्म विनाश हो जाएँगे। अंत मते सो गते मेरे पास आएँगे। बाकी यह सृष्टि का चक्र सतयुग,त्रेता,द्वापर यह याद करो या शांतिधाम,सुखधाम,दुःखधाम। दुःखधाम को भूलो, शांतिधाम में चलो। हम तुमको सुखधाम में भेज देंगे। हम और तकलीफ तो नहीं देते हैं। ये याद करते रहो। इसको ही कहा जाता है मन्मनाभव–मद्याजीभव। अभी कुछ तकलीफ देते हैं कोई? बाप जानते हैं कि माताओं को कितना तकलीफ दूँगा, सारा दिन किचन आदि में पड़ी हैं, उनको तकलीफ तो नहीं देने का है। बहुत तकलीफ तो देखी हैं। इतने शास्त्र,वेद,ग्रंथ, जप,तप,दान,पुण्य कोई कम थोड़े ही की हैं। हम सिर्फ अभी दो अक्षर कहता हूँ। अल्फ को याद करो और बे को याद करो। बाप को याद करो, मम्मा को याद करो, अपनी क्रियेशन को याद करो, स्वर्ग को याद करो। अरे, बाप को याद करो, वर्से को याद करो। यह तो रावण का वर्सा है ना। रावण के वर्से को भूलो। दुःख का वर्सा रावण का है। इसे वर्सा थोड़े ही कहेंगे, श्राप कहेंगे। बाप कहते हैं मैं तुमको वर्सा देता हूँ, यह रावण तुमको श्राप देते हैं। अभी समझा! इसलिए अभी श्रापित होने से हम छुड़ाने आया हूँ, वर्सा देता हूँ। क्या तुमको वर्सा नहीं चाहिए? बच्चे बनेंगे तो वर्सा लेंगे, नहीं तो कैसे लेंगे! अच्छा चलो, टोली दो बच्ची। बहुत कितना समझावें, याद भी तो पड़े ना। भूल जाते हैं। कितने–2 किस्म से समझाते हैं फिर भूल जाते हैं। अभी बाप क्या करे! ज़मीनें बहुत पड़ी हैं, फालतू किराया खाते हैं। इससे (तो) बिचारे यह कर देवे तो बाप कितना किराया देवे। कोई किराये पर बाप को दे देवे तो भी उनको बहुत कुछ मिले ; क्योंकि ईश्वर अर्थ लगाते हैं ना। भले किराया भी कोई लेवे। तीन पैर पृथ्वी के किराये पर भी नहीं मिलते हैं। बॉम्बे में तो बड़ी तकलीफ होती है। हम बहुतों को जानते भी हैं जिनके पास बहुत पैसे हैं, किराये पर मकान भी पड़े हुए हैं। वो चाहते हैं कि हम हॉस्पिटल बनावें, यूनिवर्सिटी बनावें। वो गवर्मेन्ट के साथ लिखा–पढ़ी कर रहे हैं कि हम यह जो प्रॉपर्टी है (इसमें) कॉलेज बनाते हैं। अरे, यह कॉलेज बड़ी सहज है अच्छी। उनको राय देना चाहिए– अरे, कॉलेज कम यूनिवर्सिटी। एकदम बेड़ा पार होगा। सदैव के लिए बीमारी से छूट जाएँगे। ये धन के लिए पढ़ते हैं ना। ये पढ़ाई ऐसी है जो फर्स्टक्लास धनवान बन जाएँगे। पढ़ाई कोई बहुत थोड़े ही है, (सिर्फ) इस सृष्टि–चक्र को जानना है, झाड़ के आदि,मध्य,अंत को जानना है, और कोई बहुत तकलीफ थोड़े ही है। तकलीफ है? ना, कुछ भी तकलीफ नहीं है। फिर तुम यहाँ से भूल जाती हो। तुम्हारी जो देवरानी थी ना....उसका नाम क्या था? (किसी ने कहा– राधारानी)। तो उनको हम बोलते थे....जैसे राधे को मैं महारानी बनाता हूँ, तुम बनो। बस, यहाँ सुनती थी अच्छा, फिर वहाँ जाकर वहाँ की वहाँ रही। कभी चिट्ठी नहीं, कभी याद नहीं, कुछ भी नहीं। देखो, माया कैसी है! माया एकदम नाक से पकड़कर पकड़ लेती है। अभी पता नहीं तुम क्या करेंगी? तो पवित्रता की बात है, उसमें अबलाओं को सहन करना पड़ता है। मार–पीट बहुत होती है; परन्तु क्या करें। भई, थोड़ी मार–पीट तो सहन करनी पड़े ना।

कुछ तो सहन करना पड़े, इतना ऊँचा बनना है। बस, मार मिलती है तो हाय शिवबाबा–2 करती रहो। बेड़ा पार हो जावे। भले मार–मारकर ख़तम कर देवे तो पहुँच जावे। बड़ा ऊँचा पद पा सकती है। बना हुआ है ना। अबलाओं के ऊपर अत्याचार तो लिखा हुआ है इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में। अबलाओं के ऊपर अत्याचार आसुरी सम्प्रदाय का बहुत रहता है। जब पाप का घड़ा भर जाता है तब विनाश होता है, वो तो लिखा ही हुआ है। सो तो घड़ा भरना चाहिए ना। जब तलक होगा तब तलक जब पिछाड़ी होगी तो घड़ा पूरा भर जाएगा। अभी ड्रामा में है, इसमें बाबा क्या कर सकते हैं! सहन करना पड़े। ऐसी–2 नाजुक बच्चियाँ सहन न कर सकें। फिर क्या करेंगे? पति को कैसे हम नाराज़ करेंगी? बाबा जब बॉम्बे में जाते हैं, समझाया था ना, तो बहुत अच्छी–2 फैशनेबुल आती हैं। मित्र–संबंधी तो बहुत धनवान हैं, आते हैं। हम बोलते हैं फिर क्या विचार है? चलेगी स्वर्ग में? याद तो करते रहते हो कि यह मरी(मरा), स्वर्ग में गया। स्वर्ग में भी गया तो कहाँ गया? जा करके क्या बना? प्रजा बनी, ढेढ बना, चमार बना या स्वर्ग में गया? यह तो बहुत सहज कह देते हैं कि स्वर्ग में (गया)। उनको यह मालूम तो है नहीं कि स्वर्ग में कोई राजा है, रानी है, साहूकार है (या) गरीब है। बस, खाली (कह देते हैं) कि वैकुण्ठ में गया। तो बाप उनको कहते हैं कि चलो, हम तुमको एकदम वैकुण्ठ की महारानी बनावें। देखो, लक्ष्मी–नारायण थे। ज़रूर उनको वर्सा किसने दिया होगा? शिवबाबा ने। तो शिवबाबा तुमको भी कहते हैं कि चलो, हम तुमको बनावें, बाकी पवित्र ज़रूर रहना पड़ेगा। फिर अगर हमारा पति न रहे तो? अच्छा, न रहे तो तुमको कोई भी हालत से पवित्र रहना पड़े। मैं थोड़े ही पति को नाराज करूँगी, अगर माँगेगा तो विख ज़रूर दूँगी। तो तुम वैकुण्ठ में भी नहीं चल सकेंगी। यहाँ मरो मूत में। मैं खुल्ला बोलता हूँ एकदम अच्छी तरह से। जोड़ी जो भी आती है, पवित्रता की रखड़ी बाँधो तो मैं गारंटी करता हूँ (कि) पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। देखो, काम शत्रु है। बाप भी कहते हैं– भगवानुवाच! काम शत्रु है। इन पर जीत पहनने से तुम स्वर्ग का मालिक बन सकते हो। क्या विचार है? ....वो बोलती है अच्छा, हम रहेंगे, वो बोलते हैं कि हम नहीं रह सकते हैं। यह तो बहुत तकलीफ होगी। बाबा बिल्कुल क्लीयर कहते हैं, अच्छी तरह से। पीछे कोई ता गुस्से में आ करके हिम्मत करके...लेती हैं कि अच्छा, देखा जाएगा। पीछे इनका झगड़ा चलता है। शुरू से देखो अखानी ऐसे हुई है। इनका एक गीत है कि शुरू में एक था, वो विलायत में रहता था। वो जब आया तब उनको काम की लगी। फिर वो कहे कि हम तो नहीं देंगी (और) वो कहे कि नहीं, हम दूँगा, फिर मार–पीट चली। पुलिस में केस गया। ...कोर्ट में गया, इस एक ही बात से। शुरुआत में ऐसे हुआ था, इसी बात से हुआ था। वो कहे कि मैं भूखा आया हूँ, अभी मुझे कुछ तो खिलाओ। तो फिर उन्होंने कहा– वो ज़हर का भूखा है, पॉइज़न का भूखा है। वो बोले, हम पॉइज़न नहीं देंगी। संसार समाचार, पैसे अख़बार, भई नई खबर देखो, झगड़ा लगा विख के ऊपर, केस गया कोर्ट में। उस समय में वहाँ बड़ा मज़ा करते थे। सारा केस इनसे लगा है। यह जो सारा हंगामा हुआ था, यह इनसे चला है। ये जो लिखा हुआ है कि पाण्डवों के लाखा भवन को कौरवों ने आग लगाई। तो बरोबर यह पाण्डवों का जो बाबा का लाखा भवन था, जिसमें तुम बच्चियाँ रहती थीं, उनको भी घासलेट ले करके आग लगाने आए थे। तो अभी प्रैक्टिकल में तुम सब सुनते हो कि 5000 वर्ष पहले क्या हुआ था, सो अब प्रैक्टिकल हो रहा है। फिर शास्त्रों में तो टिटपिट लिख दी है। अच्छा! अभी छुट्टी लेते हैं।

मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का नं०वार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार। अभी तुम समझ जाओ। गुडमॉर्निंग।